International Indexed & Refereed Research Journal, February, 2013 ISSN 0975-3486, (Print) , E- ISSN – 2320-5482 ,RNI –RAJBIL- 2009-30097, VOL- IV * ISSUE- 41

शोध पत्र- हिन्दी

आंचलिक उपन्यासकार नागार्जुन कृत बलचनमा में आंचलिकता

* पूजा धमीजा

* शोधार्थी हिन्दी विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू

February,2013

आंचलिक उपन्यास अचंल के समग्र जीवन का उपन्यास होता है। उसका संबंध जनपद से होता है ऐसा नहीं, वह जनपद की ही कथा है। आंचलिक उपन्यास का एक विशिष्ट प्रकार है क्योंकि उसका उद्देश्य अन्य उपन्यासों से भिन्न है। वह न तो घटना–प्रधान उपन्यासों की तरह कुछ खास पात्रों के जीवन से संबंधित घटनाओं और समस्याओं को लेकर वेगवती धारा की तरह नई–नई भूमियों को पार करता हुआ आगे बढ़ता है और न तो वह मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की तरह कुछ गिने–चुने पात्रों के मन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इन दोनों अवस्थाओं में बिखराव का कोई प्रश्न ही नहीं उठता किन्तु आंचलिक उपन्यास का उद्देश्य है स्थिर स्थान पर गतिमान समय में जीते हुए अंचल के व्यक्तित्व के समग्र पहलुओं को उद्घाटित करना। अंचल के जटिल जीवन–चित्र को अंकित करने के लिए लेखक कहीं मोटी रेखाएँ खींचता है, कहीं पतली, कहीं अवकाशों को भरने के लिए दो–चार बिन्दु अपनी तूलिया से झाड़ देता है। अनेक पर्वों, उत्सवों, परम्पराओं, विश्वासों, व्यथा के अवसरों, गीतों, संघर्षों, प्रकृति के रंगों, पुराने–नए जीवन–मूल्यों आदि से लिपटा हुआ अंचल का जीवन अभिव्यक्ति के एक नए अंचल की चतुर्मुख यात्रा करता है और उन उपादानों को यहाँ से, वहाँ से चुनता है जो मिलकर अंचल की समग्रता का निर्माण करते है।

नागार्जुन का 'बलचनमा' (1952 ई.) बहुचर्चित आंचलिक उपन्यास है। इसमें 'बलचनमा' नामक निम्न वर्गीय किसान पुत्र अपनी यातनापूर्ण जीवन–कथा कहता है। पिता के मरने के कारण बचपन में ही उसे जमींदारों के यहाँ नौकरी करनी पड़ती है ओर जमींदारों के अमानवीय अत्याचारों को झेलना पड़ता है। फिर वह बड़ा होकर किसान–जीवन की समस्त पीड़ाओं ओर अभावों की यात्रा करता है तथा सामाजिक विषमता को भोगता हुआ उसका विश्वस्त साक्षी बनता है। पूरे उपन्यास में किसान का दुःख दर्द और संघर्ष व्याप्त है तथा मानवीय अधिकारों को जकड़ने वाली शोषक जर्जर मान्यताओं, वर्ग व्यवस्थाओं और परम्पराओं पर कलात्मक प्रहार किया गया है।

आंचलिक उपन्यास में किसी अचंल का तथ्यपरक चित्रण रहता है। उसमें भौगोलिक स्थिति का यथातथ्य वर्णन मिलता है। प्रत्येक अंचल की अपनी–अपनी अलग पहचान होती है अलग भौगोलिक विशेषता होती है। 'बलचनमा' उपन्यास में बिहार के मिथिलांचल का अंकन है। जिसमें रामपुर, कटिहार, मधोबनी, पटना, समस्तीपुर, सदर दरभंगा, सोनपुर, छपरा, बरहमपुरा, मोहनपुर आदि अंचलों का चित्रण किया गया है। नायक का अंचल मुख्य रामपुर है। रामपुर भारी और नामवर गाँव था। बाल–बच्चा, औरत–मर्द, धनी–गरीब कुल मिलाकर दो हजार आदमी वहाँ बसते थे। गाँव में सभी जाति के लोग रहते हैं। उपन्यास में निम्न वर्ग, जमींदार, ब्राह्मण, राजनीतिक लोग आदि का तथ्यात्मक चित्रण हैं। अंचल में रहने वाले लोगों के घर, खेती में उपजाई जाने वाली समूची फसल, आश्रम व्यवस्था आदि का तथ्यात्मक चित्रण है।

'बलचनमा' में लोक–संस्कृति की प्रस्तुति पग–पग पर देखने को मिलती है। प्राचीन परम्पराओं और सांस्कृतिक मान्यताओं की रक्षा का प्रश्न और भी गम्भीरता के साथ युग के सामने उपस्थित हो गया है। इस गम्भीरता को नष्ट करने के लिए आंचलिक उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में लोक–संस्कृति के उन समूचे बिन्दुओं का चित्रण किया है जिनकी सहायता से लोक–सांस्कृति का पुनरुस्थान हो। उपन्यासकार प्रदेश विशेष को रीति–रिवाज, रहन–सहन, त्यौहार–मेले, लोकनृत्य, लोकगीत, परम्परागत मान्यताएँ, रूढ़ियाँ, किस्से कहानियाँ, कला, बोलीभाषा, लोकोक्ति, मुहावरे आदि का यथार्थ चित्रण उपन्यास में करता है। इसके साथ–साथ उस अंचल के लोगों का भोजन, वेशभूषा, जातिवेश, जलाशय, परिवहन के साधन, आभूषण, अस्त्र–शस्त्र, वाद्ययंत्र, पशु–पक्षी, वनस्पति जैसी बहुत सारी बातें रचनाकार करता है।

नागार्जुन ने 'बलचनमा' में कथाभूमि को जीवन्त एवं प्रामाणिक बनाने के लिए मिथिलांचल के प्रचलित संस्कार, विविध रीति–रिवाज, लोक–रिवाज, लोक–विश्वास, देवी–देवता, पूजा–अनुष्ठान, शकुन–अपशकुनों का प्रयोग, टोना–टोटका, जंत्र–मंत्र, भूत–प्रेत, अतिप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास, लोक–मान्यताएँ, परम्परागत मूल्य, उत्सव, पर्व, त्यौहार तथा मेलों जैसी धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक पक्ष को बहुत अच्छी तरह उभारा है और उसी के बीच ये तत्व सहज रूप में आ गए है।

'बलचनमा' का जब एक आंचलिक उपन्यास के रूप में अध्ययन किया जाता है तब कम ज्यादा रूप में उसमें प्रकृति–चित्रण भी दिखाई देता है। अंचल के तथ्यपरक चित्रण का 'प्रकृति–चित्रण' का एक अंग है। यह साहित्य में जब सजीव पात्र के रूप में चित्रित होता है, तो उसका अपना अलग व्यक्तित्व होता है। अन्य पात्रों जैसे प्रकृति भी एक पात्र है जिस तरह 'मैला आंचल' में प्रकृति–चित्रण चित्रित है। वैसा 'बलचनमा' का प्रकृति–चित्रण नहीं है। उपन्यास में प्राकृतिक परिवेश का चित्रण बखूबी दिखता है। प्राकृतिक परिवेश जब समाज जीवन का अंग

बन जाता है तो उसके भौगोलिक परिवेश में जीवंतता आती हैं। विभिन्न भौगोलिक परिवेशों के कारण व्यक्ति के रहन–सहन, क्रिया–कलाप, जीवन–यापन में अत्यधिक अन्तर आ जाता है। मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर रहता है। प्राकृतिक परिवेश के अनुरूप ही सभ्यता एवं संस्कृति का विकास होता है। प्राकृतिक चित्रण के साथ नागार्जुन ने रामपुर की चित्रमयता प्रतिष्ठित की है।

आंचलिक उपन्यासकार जिस मानवीय यथार्थ के धरातल पर मनौवैज्ञानिक तथ्य का उद्‌घाटन चाहते हैं, वह वैयक्तिक होने के कारण समस्या के समान ही दीख पड़ता है। कभी–कभी यथार्थवाद के नाम पर ये रचनाकार अपनी अनुभूतियों के आधार पर अप्राकृतिक एवं तथ्यहीन क्षुद्र एवं निम्न वर्ग का चित्रण करते हैं जो सामान्य या उस अंचल विशेष के जन–जीवन के लिए समस्या बन जाती है तथा उनकी कृति अरुचिकर हो जाती है। 'बलचनमा' में इसका अभाव दिखाई देता है।

यथार्थ चित्रण में सामाजिक संबंध, निम्न वर्ग का चित्रण जातीयता, छुआछूत, स्त्री का (चित्रण, उच्च वर्ग–निम्न वर्ग के लोगों के सम्बन्धों का चित्रण, आर्थिक कठिनाइयों का यथार्थ) चित्रण, लोक–संस्कृति का यथार्थ रूप, भाषा का यथार्थ रूप, लोक–विश्वास, रूढ़ियाँ, परम्परा मूल्य आदि जैसी तमाम बातों का यथार्थ चित्रण उपन्यास में दिखाया है। खासकर, कृषक का जीवन किस तरह पीड़ामय, कष्टरत है इसका यथार्थ चित्रण उपन्यास में दृष्टिगोचर होता है।

मिथिलांचल को उपन्यास का केन्द्र बनाकर बाबा नागार्जुन ने मिथिलांचल के युगीन भावबोध का समूचा चित्रण 'बलचनमा' में किया है। जिस अचंल को केन्द्र बनाकर उपन्यासकार आंचलिक उपन्यास की सृष्टि करता है, वहाँ की समकालीन युगीन चेतना का समग्र चित्रण उसमें करने का उसका प्रयास रहता है। नागार्जुन इसमें सफल हुए दिखाई देते है।

इस युगीन चेतना में सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति जैसे विभिन्न रूपों का चित्रण किया जाता है। युगीन चेतना का चित्रण प्रेमचन्द ने भी अच्छी तरह किया था लेकिन नागार्जुन ने प्रेमचंद की परम्परा को आगे बढ़ाने का कार्य किया है।

जब 'गोदान' में गोबर विद्रोह का रूप लेकर जमींदार का विरोध करता है लेकिन वह उसमें किसी संगठन को बनाने में कामयाब नहीं होता बल्कि 'बलचनमा' उस विद्रोह में सफल होता है। सामाजिक स्थिति में छुआछूत, उच्च–नीचता का भाव, दास प्रथा, जातीयता, स्त्री–पुरुष का संबंध, कुटुंब व्यवस्था, परम्परागत मूल्य, रीति–रिवाज, सामाजिक संबंध आदि बातों का चित्रण किया गया है। आर्थिक स्थिति में कृषक जीवन, जमींदारों का भ्रष्टाचार, निम्न वर्ग के मजदूरों और राजनीतिक लोगों का आर्थिक स्थिति का चित्रण दिखाते है।

धार्मिक स्थिति का चित्रण करते समय उत्सव, त्यौहार, पर्व, संस्कार आदि सभी क्रिया विधियों को चित्रण बाबा ने किया है। इसमें सांस्कृतिक स्थितियाँ भी आ जाती हैं जो महत्वपूर्ण है। अचंल में किए जाने वाले अन्धश्रद्धात्मक कार्य, जंत्र–मंत्र, जादू–टोना, टोना–टोटका, रीति–रिवाज जैसी उस समय की समूची युगीन चेतना का अंकन उसमें किया गया है।

लेखक भाषा के माध्यम से ही अपनी रचना में सजीवना लाता है। सही भाषा के प्रयोग से पात्रों में सजीवता आती है और कथावस्तु स्वाभाविक लगती है। लेखक यदि अपना विचार रख रहा है तो उसकी अपनी भाषा होनी चाहिए किन्तु पात्रों के संवादों की भाषा पात्रों की मनःस्थिति, शिक्षा और वातावरण के अनुरूप होनी चाहिए। इसलिए आचंलिक कथा साहित्य में जनपदीय भाषा का प्रयोग किया जाता है। नागार्जुन के 'बलचनमा' में जनपदीय भाषा अपने पूरे प्रभाव के साथ उपस्थित है।

उनकी अधिकांश कथा–कृतियाँ आचंलिक हैं, इसलिए वे सहज भाव से लोक प्रचलित सामान्य लोकभाषा या जनपदीय भाषा को अपनाते हैं।

जनपदीय भाषा के मुहावरों, लोकोक्तियों और जनपदीय शब्दावली को 'बलचनमा' में बहुत ही खूबसूरती के साथ इस्तेमाल किया गया है। यह सारा वृतांत न केवल वातावरण की सृष्टि करता है, अपितु पात्रों की मनोदशा, संघर्ष, जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण आदि को भी सामने लाता है।

समग्रता में देखें तो हमें 'बलचनमा' एक सफल आंचलिक कृति दिखाई पड़ती है। आंचलिक उपन्यासों की परंपरा में बाबा नागार्जुन का स्थान प्रथम में आता है। क्योंकि 'बलचनमा' का प्रकाशन सन् 1952 ई. का है और 'मैला आंचल' का प्रकाशन सन् 1954 ई. का है। इसलिए आंचलिक उपन्यास की समूची परंपरा में प्रारंभिक रचना के रूप में 'बलचनमा' की तरफ देखना चाहिए।

आंचलिक उपन्यासों के मानदंडों का निर्माण तो 'मैला आंचल' के प्रकाशन के बाद ही होता है। लेकिन उन सभी मानदंडों का समावेश इन रचना में दिखाई देता है। आंचलिक उपनस के लिए अचंल विशेष का तथ्यपरक चित्रण, लोक–संस्कृति का चित्रण, युग चेतना, प्रकृति–चित्रण, चरित्र–चित्रण, विशिष्ट आंचलिक भाषा आदि विशेषताएँ महत्वपूर्ण है। अतः उन सभी विशेषताओं का समावेश इस कृति में है। इसलिए बाबा नागार्जुन का 'बलचनमा' एक आंचलिक उपन्यास के रूप में सफल रचना है।